शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

डॉ. बालशौरि रेड्डी के उपन्यास साहित्य में नारी विमर्श

तरूणा दाधीच (जे.आर.एफ. शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

युग पुरुष स्वामी विवेकानंद के अनुसार पश्चिम की नारी पहले पत्नी है फिर माँ, जबकि भारत की नारी पहले माँ है और बाद में पत्नी। स्पष्टतः उपर्युक्त कथन में मुख्य रूप से अन्तर नारी का नहीं बल्कि दो भिन्नेतर संस्कृतियों का है। भारतीय समाज कितना ही आधुनिक क्यों न कहलाने लगे, यहाँ पर स्त्री के प्रति पुरुष समाज का एक विशेष दृष्टिकोण रहा है। समाज में स्त्री के प्रति जो कुछ घटित होता है, एक संवेदनशील साहित्यकार उससे बचा नहीं रह पाता। वह उसके जीवन के पहलुओं को कथा-कहानी के माध्यम से उकेरता चलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ.बाल शौरी रेड्डी के उपन्यास साहित्य में नारी विमर्श को तलाशा गया है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में हमेशा से ही महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा दूसरे दर्जे का स्थान दिया गया है उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति शोषित और असहाय से अधिक नहीं देखी गई। ‘‘पुरूष और नारी सृष्टि के निर्माण और संचालन के दो मूलभूत तत्त्व है लेकिन पुरूष मनुष्य है, मानव है और नारी केवल नारी है, नर की प्रतिछाया नारी।’’1 महिलाओं को हमेशा कमतर ही आंका गया जिसके परिणामस्वरूप उनके पृथक अस्तित्व को कभी पहचान नहीं मिल पाई, पति के बिना महिला के औचित्य, उसकी संपूर्णता के विषय में गंभीरता से चिंतन करना किसी ने जरूरी नहीं समझा। आज से करीब डेढ़ सौ साल पहले भारतीय स्त्री को अपनी सामाजिक स्थिति और यातना की पहचान नहीं थी। अपने घर की चाहरदीवारी की परेशानियों से बिना शिकायत जूझना उनकी मजबूरी थी और उन्हें यथा संभव संवार कर चलना उनका स्वभाव। घर से बाहर जाती नहीं थी इसलिए जहां, जितना, जैसा मिला, सब शिरोधार्य था। सहनशीलता और त्याग उनके आभूषण थे। अगर सम्मान मिला तो अहोभाग्य, दुत्कार मिली तो नियति क्योंकि अपने जीवन से एक स्त्री की अपेक्षाएं कुछ थी ही नहीं, परन्तु अपने अधिकारों के प्रति सजग करने, उन्हें अपेक्षित सम्मान दिलाने हेतु प्रगतिशील लेखकों व कवियों का अद्‌वितीय योगदान है जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं को शोषित सामाजिक और पारिवारिक छवि को सार्वजनिक किया। स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार और उनकी मार्मिक दशा पर लोगों का ध्यान आकर्षित कर महिलाओं को समाज की मुख्य धारा से जुड़ने का एक अवसर प्रदान किया।

साहित्य समाज सापेक्ष ही होता है, क्योंकि समाज में ही प्रस्फुटित, पल्लवित एवं पुष्पित विचारों का संचयन साहित्य कहलाता है। साहित्य जीवन के जिस सत्य की अभिव्यक्ति करता है

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

वह नारी बिना अपूर्ण व अधूरा ही नहीं वरन् उसकी रचना भी असम्भव है। साहित्य की समस्त विधाओं में स्त्री पात्रों का प्राधान्य रहता है। उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास साहित्य में नारी-विमर्श के दौरान यह स्पष्ट कर दिया है कि "आज भी हम स्त्रियों को उनका अपेक्षित सम्मान नहीं दिला पा रहे और न ही उनके परिवार और समाज की ओर से वह सपोर्ट सिस्टम तैयार कर पा रहे हैं जो उन्हें जीवन की विसंगतियों से, असुविधाओं और कठिन परिस्थितियों से जूझने के रास्ते मुहैया करवा सके। आज भी स्त्री, अपने अधिकारों से वंचित है।"2 उसे जननी, बहन आदि संज्ञाएँ दी गई हैं परन्तु उसके प्रति होने वाले व्यवहार से ये केवल शब्द भर रह जाते हैं। इनके पीछे निहित अन्तर्भावना कहीं तिरोहित हो जाती है।

"जीवन भावनाओं को लुटाने वाली नारी ने श्रद्धा, आदर्श की देवी कल्याणी अधिष्ठात्री, इन सारे विशेषणों से जुड़ने के सिवा पाया ही क्या है ? पीयूष स्त्रोत सी बहकर अपने को मरूस्थल बनाना शायद उसकी नियति रही है। पुरूष के प्रेम रस में अपनी जीवन मदिरा ढ़ाल देने वाली नारी को आखिर मिला ही क्या ? नारी जन्म ही क्या समस्याओं की शुरूआत है।"3 डॉ. बालशौरि रेड्डी के उपन्यास 'जिन्दगी की राह' की सुहासिनी का निर्माण इन्हीं समस्याओं के बीच हुआ है।

'दक्षिण के प्रेमचन्द' कहे जाने वाले डॉ. बालशौरि रेड्डी मूलतः तेलुगु मातृभाषी हैं। उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम हिन्दी को बनाया है। डॉ.. बालशौरि रेड्डी हिन्दी साहित्य के प्रतिभाशाली, जागरूक, संवेदनशील और प्रगतिशील कथाकार हैं। अपने उपन्यासों में डॉ.. बालशौरि रेड्डी ने वैदिक युगीन सम्मान से पदच्युत होती नारी की शोचनीय स्थिति को चित्रित किया है। डॉ.. रेड्डी के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों को पढ़कर यह भी स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन समय में जो स्त्री की स्थिति थी आज भी उसमें किस सीमा तक परिवर्तन आया है। क्योंकि अपने उपन्यासों में उन्होंने प्राचीन समय की नारी पात्र और वर्तमान की नारी पात्रों का वर्णन किया है। ये नारी पात्र अपने युग एवं जीवन की परिस्थितियों के अनुसार स्वाभाविक रूप से अपनी-अपनी भूमिकायें अदा करते हैं और संवेदनशील हृदय में सहानुभूति ओर आक्रोश का भाव पैदा करते हैं। बालशौरि रेड्डी के साहित्य में नारी की प्रेम संचेतना, वैवाहिक संचेतना, मातृ संचेतना, पारिवारिक संचेतना, शिक्षा संचेतना आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

बालशौरि रेड्डी के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र उदात्तगुण सम्पन्न हैं। उनमें सतीत्व की उज्ज्वलता के साथ समसामयिक परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढ़ालते हुए पुरूष के कन्धे से कन्धा मिलाकर जीवन के हर कदम पर उसका साथ देने की शक्ति भी विद्यमान है। अपनी निर्भीकता और स्पष्टवादिता से वे पाठक को चकित करके उसे सोचने के लिए विवश करने में भी समर्थ है। ये नारीवादी विचारों के पोषक हैं। आपके उपन्यासों में नारी को सजग, अधिकारों के प्रति सचेत दर्शाया है। साथ ही समाज को दिशा-निर्देश दिए हैं।

रेड्डी के उपन्यासों की नायिकाएं कुसुम कोमल होते हुए भी समय आने पर व्रजकठोर हो जाती हैं। ये नारी पात्र शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों में शक्तिशाली हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में नारी पात्र समुचित रूप से राजनीति

में निर्भीकता से भाग लेते हैं। 'शबरी' उपन्यास में रेड्डी ने रामायणकालीन शबरी को एक नयी विशेषता के साथ प्रस्तुत किया है। शबरी अपने शौर्य पराक्रम एवं योग्यता के कारण अपने कबीले का नेतृत्व कर पाती है। रेड्डी जी शबरी को भीरू व डरपोक नहीं बताकर शबरी को निर्भीक व साहसी सिद्ध करते हैं। 'दावानल' उपन्यास की नायिका नागम्मा महामंत्री पद पर नियुक्त थी तथा समयानुकूल महाराज से विचार-विमर्श करती, परामर्श देती है। यही नहीं युद्ध काल में युद्धक्षेत्र में जाकर वीरतापूर्वक युद्ध भी करती है। 'वीर केसरी' उपन्यास की 'गौरी' पुरूष वेश धारण कर अपने पिता के साथ युद्ध करने जाती है एवं शत्रुओं पर भारी पड़ती है।

बालशौरि रेड्डी ने ऐसे नारी पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डाला है एवं समाज को मार्गदर्शन दिया है जहां प्राचीन काल में नारियों को इतने अधिकार प्राप्त थे तो आज यह दुर्दशा क्यों ? जहां नारियों का जाना वर्जित था वहाँ नारियों का हस्तक्षेप सुफलदायक था, तो आज उन्हें वंचित रखा जाता है ? जहां राजकार्य में परामर्श हेतु स्त्री नियुक्त थी, वहीं आज घरेलू कार्यों के अतिरिक्त स्त्री हस्तक्षेप उचित नहीं माना जाता ? प्राचीनकाल से नारी निर्भीक होकर राज्य भ्रमण करती थी, परन्तु आज नारी घर से बाहर सुरक्षित अनुभव करती है। सुन्दरता, कोमलता एवं विनम्रता को भारतीय नारी के पर्याय मानकर जब उसे सामाजिक क्षेत्र से दूर रखा गया तो उसमें भीरूत्व एवं आत्मसम्मान का अभाव घर कर गए। परन्तु

"वक्त के पैर नहीं होते, न जिस्म रहा करता है।
पर वक्त चला करता है, वक्त चला करता है।
जी हाँ, वक्त चलता हुआ उस मंजर तक पहुँच गया जहां कि औरत ने सभी वर्जित क्षेत्रों को अर्जित करने का दावा किया।"4 आधुनिक युग के लेखकों ने अपनी रचनाओं के द्वारा स्त्री को इस भ्रामक धारणा से बाहर निकालने का प्रयास किया। स्वयं बालशौरि रेड्डी ने अपनी उपन्यासों के नारी पात्रों को पुरूषों के हाथ की कठपुतली न बनाकर, उन्हें विवेकशील, चिन्तनशील होकर स्वयं अपने भविष्य का निर्माण करने में समर्थ सिद्ध किया। 'यह बस्ती : ये लोग' की सरोजा को कदम-कदम पर प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। सरोजा जब अपनी परम्परावादी नानी को छोड़कर समाजसेवा हेतु जाती है तो उस क्षेत्र के ढोंग और भ्रष्टाचार को देखकर उसका पर्दाफाश करना चाहती है। निर्भीकतापूर्ण कामुक राधाकृष्ण का सामना करती है। "सरोजा मारे क्रोध के नागिन सी फुकारने लगी उसने चप्पल उतार कर राधाकृष्ण को सबक सिखाना चाहा।"5 भग्न सीमायें की बसन्ता एक सुशिक्षित नारी है। जो विवाह को अपने जीवन का मात्र एक लक्ष्य मानने के लिए तैयार नहीं है। वह नारी-जागरण का संकेत लेकर हमारे समक्ष उपस्थित होती है। स्वाभिमान, त्याग एवं आत्मसम्मान मनुष्यमात्र के लिए वरेण्य गुण है, परन्तु ये जब अपनी सीमा का अतिक्रमण कर बढ़ जाते हैं, तो ये गुण अहंकार में परिवर्तित होकर अवगुण का स्वरूप धारण कर लेते हैं, परन्तु बालशौरि रेड्डी के उपन्यासों में उपस्थित नारी पात्र स्वाभिमान, त्याग व आत्मसम्मान युक्त ही दृष्टिगत होते हैं। 'शबरी' उपन्यास में शबरी को अपनी शक्ति एवं योग्यता के आधार पर कबीले का नेतृत्व मिलता है। 'यह बस्ती : ये लोग' की सरोजा अपनी नानी द्वारा जायदाद न देने की धमकी दिए जाने पर वह उसकी चाह नहीं रखती एवं अपनी राह स्वयं चुनती है। 'भग्न सीमायें'

उपन्यास में शीला को जब राजेन्द्र के घर वालों ने उससे दूर चले जाने को कहा तो शीला अपने प्रेम का त्याग कर, स्वयं के दुःखों को भूलकर दूसरों की खुशी के लिए राजेन्द्र से दूर चली जाती है, यही नहीं वह राजेन्द्र को भी समझाती है "डाक्टर, सच्चा प्रेम प्रतिफल नहीं चाहता। वह यही चाहता है कि जिससे प्रेम हो, वह सुखी रहे। मैं आपका सुख और आनन्द चाहती हूँ। अतः आपसे यह निवेदन करती हूँ आप मुझे भूल जाने की कोशिश करें, इसी में मेरी प्रसन्नता है।"6

'स्वप्न और सत्य' की अनुराधा उदार एवं सहनशील होते हुए भी स्वाभिमानी है। वह असत्य व अनुचित का विरोध करने में संकोच नहीं करती है। उसका प्रति चन्द्रशेखर जब उस पर हाथ उठाता है तो वह निःसंकोच भाव से पूछती है "मैं भी बदले में आप पर प्रहार कर दूं तो आपकी इज्जत कहां रहेगी।"7

'कालचक्र' उपन्यास में परमशिवम की पत्नी उनके एकछत्र अधिकार का विरोध करती है, उनकी मनमानी का विरोध करती है वह चाहती है कि परमशिवम द्वारा निर्धारित पुरानी धारणाओं को अपने पुत्रों पर लागू न की जाए। समय के अनुसार उन धारणाओं में परिवर्तन अपेक्षित है।

स्त्री और पुरूष संसार रूपी रथ के दो चक्र हैं। ये दोनों जब एकोन्मुख लक्ष्य से प्रगति-पथ पर आगे बढ़ती है तो विकास होता है, अथवा प्रतिकूल परिणाम समक्ष आते हैं। इन दोनों में प्रेरक-प्रेरित सम्बन्ध बना ही रहता है। युगीन परिस्थितियों के अनुसार भूमिकाएं बदल सकती हैं, कभी पुरूष प्रेरक बनता है तो कभी स्त्री। बालशौरि रेड्डी के सभी उपन्यासों में स्त्री को प्रेरणादायिनी के रूप में विभिन्न संदर्भों में दर्शाया गया है। 'धरती मेरी माँ', उपन्यास में सोनी अपने पति के लिए प्रेरक शक्ति सिद्ध होती है, साथ ही समाजसेवा के द्वारा संथाल समाज को भी विकास की प्रेरणा प्रदान करती है। सोनी रूपनारायण की न केवल छाया बनी बल्कि उसके हर कार्य में सहयोग देती है। 'लकुमा' उपन्यास में महारानी मल्लंाबिका लकुमा को समष्टि के लिए बलिदान की प्रेरणा देती है। 'वीर केसरी' उपन्यास की गौरी अपने विलासी पिता को प्रेरणा प्रदान करके उसे कर्मण्य बनाती है। 'बैरिस्टर' उपन्यास की अनसूया अपने मौन समर्पण, सेवाभाव, सहृदयता से अपने पति व सपत्नी में हृदय परिवर्तन लाने में सफल होती है।

निष्कर्ष

आज का युग नारी विमर्श का युग है। नारी सम्बन्धित मुद्दों व प्रसंगों पर यत्र-तत्र विचारशील मुद्दों पर बहसें होती है। आज हर चर्चा में स्त्री मुद्दों को प्राथमिकता दी जाती है, आज की स्त्री भी अपने अस्तित्व के प्रति अधिक सचेत, अधिकारों के क्षेत्र में जागरूक एवं परम्परागत रूढ़ीवादी मूल्यों के प्रति संघर्षशील है। ऐसे में डॉ. बालशौरि रेड्डी का साहित्य आज के युग में एक प्रकाश स्तम्भ सदृश है, जो नारियों में साहस, निड़रता, जागरूकता, प्रगतिशीलता व मानवीयता को जाग्रत करने में अहम् भूमिका निभाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 नारी जीवनः वैदिक काल से आज तक, कमलेश कटारिया, पृ.सं.210

2 कम से कम एक दरवाज़ा - सुधा अरोड़ा, आजकलः मार्च, 2012

3 प्रेमचन्द और हमारा समय, सम्पादकः मीनाक्षी श्रीवास्तव, पृ.सं. 197

4 नारी जीवन : वैदिक काल से आज तक, कमलेश कटारिया, पृ.सं. 18

5 यह बस्ती: ये लोग, डॉ.. बालशौरि रेड्डी, पृ.सं. 77

6 भग्न सीमायें, डॉ. बालशौरि रेड्डी, पृ.सं. 103

7 स्वप्न और सत्य, डॉ.. बालशौरि रेड्डी, 315